सलाहकार समिति

01. प्रो0 आर0एस0 नेगी, निदेशक, हे0न0ब0ग0वि0वि0, पौड़ी परिसर।

02. प्रो0 सन्तन सिंह नेगी, (विभागाध्यक्ष) इतिहास विभाग, हे0न0ब0ग0 वि0वि0 श्रीनगर।

03. प्रो0 वाई0एस0 फर्सवाण, इतिहास विभाग, हे0न0ब0ग0वि0वि0 श्रीनगर।

04. डॉ0 राजपाल सिंह नेगी, इतिहास विभाग, हे0न0ब0ग0वि0वि0 श्रीनगर।

05. डॉ0 जयजीत बड़थ्वाल, इतिहास विभाग, हे0न0ब0ग0वि0वि0 पौड़ी।

06. डॉ0 रविशरण दिक्षित, इतिहास विभाग, डी0ए0वी0(पी0जी0) कालेज, देहरादून।

07. डॉ0 राजेश कुमार उभान, प्राचार्य, राजकीय महाविद्यालय पाबो।

08. डॉ0 विमलेश डिमरी, पत्रकारिता विभाग, डी0ए0वी0 (पी0जी0) कालेज, देहरादून।

09. डॉ0 कैलाश चन्द्र दुदपुड़ी, प्राचार्य, राजकीय महाविद्यालय मजरा महादेव।

आयोजन समितियाँ

पंजीकरण समिति- डॉ0 वीरेन्द्र चन्द, श्री मनोज कुमार सिंह, श्री उमेश चन्द्र बंसल, श्री प्रतीक वर्मा।

सांस्कृतिक कार्यक्रम समिति- डॉ0 लक्ष्मी नौटियाल, श्री प्रदीप कुमार।

विशिष्ट अतिथि व्यवस्था समिति- डॉ0 अखिलेश सिंह, डॉ0 मंजीत भण्डारी, डॉ0 रवि नौटियाल।

स्वागत समिति- डॉ0 लक्ष्मी नौटियाल, डॉ0 दुर्गेश नन्दिनी, श्री संदीप लिंगवाल।

मंच समिति - श्री अरविन्द कुमार, श्रीमती बन्दना सिंह।

भोजन व्यवस्था समिति- डॉ0 शिवेन्द्र सिंह, श्री राकेश नेगी, श्री राम लाल।

प्रकाशन समिति- डॉ0 श्याम मोहन सिंह, श्री अरविन्द कुमार।

आवास समिति- श्री धर्मेन्द्र कुमार राय, श्री राज कुमार पाल।

आयोजक मण्डल

समन्वयक - डॉ0 जितेन्द्र कुमार नेगी,

सह समन्वयक - डॉ0 प्रवेश मिश्रा

संगोष्ठी सचिव - डॉ0 राजीव दूबे

संगोष्ठी सह सचिव - श्री राम सिंह नेगी

कोषाध्यक्ष - डॉ0 विरेन्द्र चन्द

आयोजन सचिव- डॉ0 देवकृष्ण थपलियाल
डॉ0 शिवेन्द्र सिंह चन्देल
डॉ0 श्याम मोहन सिंह
डॉ0 गोपेश सिंह

पंजीकरण प्रपत्र

नाम - .....

पदनाम - .....

विश्व विद्यालय/कालेज का नाम .....

.....

पता - .....

.....

मोबाइल नं - .....

ईमेल - .....

डी0डी0नं0 .....

दिनांक .....

धनराशि .....

आवास व्यवस्था : हाँ /नही

शोधपत्र /सांराश का शीर्षक .....

हस्ताक्षर

नोट - कृपया आवास व्यवस्था के लिये संगोष्ठी की तिथि से दो दिन पूर्व मोबाईल नं0 8004043877 पर सम्पर्क करने का कष्ट करें ।

एकदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

"भारतीय संस्कृति में पर्यावरणीय चेतना"

11 नवम्बर 2019, सोमवार

संगोष्ठी स्थल

राठ महाविद्यालय, पैठाणी

प्रायोजक :
रिसर्च फेडरेशन ऑफ इण्डिया, जबलपुर, म0 प्र0 एवं एकेडमिक सोसाइटी ऑफ एजुकेशन फॉर रिसर्च एंड डेवलपमेन्ट, बन्देपुर, वाराणसी

आयोजक :
इतिहास विभाग, राठ महाविद्यालय पैठाणी, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

मुख्य संरक्षक
श्री गणेश गोदियाल (संस्थापक राठ महाविद्यालय पैठाणी)

संरक्षक
श्री दौलत राम पोखरियाल
(प्रबन्धक राठ महाविद्यालय पैठाणी)
डॉ0 जितेन्द्र कुमार नेगी
(प्राचार्य राठ महाविद्यालय पैठाणी)

संगोष्ठी संयोजक
डॉ0 राजीव दूबे
(असि0 प्रोफेसर) इतिहास विभाग,
(राठ महाविद्यालय पैठाणी)

संगोष्ठी के विषय में

विश्व की समस्त ज्ञात संस्कृतियों में प्राचीनतम् संस्कृति के रूप में भारतीय सनातन संस्कृति ने पर्यावरण को अत्यन्त महत्वपूर्ण मानते हुये इसे ईश्वर का प्रतिरूप ही माना है। शायद यही कारण है कि इस संस्कृति ने सभी पर्यावरणीय पक्षों यथा भूमि, जल और वायु को ईश्वरीय छवि प्रदान किया है। भारतीय संस्कृति की सर्वश्रेष्ठ प्रतिनिधि के रूप में वैदिक ग्रन्थों ने समस्त पर्यावरणीय पक्षों को ईश्वर मानते हुये इनके रक्षण का निर्देष दिया है।

भारतीय सांस्कृतिक परम्परा में मानव एवं प्रकृति के मध्य सुन्दर समन्वय सर्वत्र बिखरा पडा है। गीता मे भगवान श्री कृष्ण ने स्वयं को वृक्षों मे अस्वत्थ (पीपल) कहा है। पर्यावरण की दृष्टि से पीपल के महत्व को आज भी सर्व स्वीकार्यता प्राप्त है। हम यह भी देखते हैं कि भारतीय परम्परा में प्रचलित सभी 16 संस्कारों में पर्यावरण के विभिन घटकों को महत्व प्रदान किया जाता है। भारतीय सांस्कृतिक समृद्धि के सर्वश्रेष्ठ वाहक के रूप में गौतम बुद्ध का समस्त जीवन-जन्म, ज्ञान की प्राप्ति, प्रसार एवं और उनका निर्वाण भी प्रकृति की गोद में हुआ। इसी प्रकार के असंख्य ऐसे उदाहरण हैं जिन्हें भारतीय सांस्कृतिक परम्परा और पर्यावरण के मध्य अविछिन्न सम्बद्ध के रूप में निरूपित किया जा सकता है।

शीर्षक : ''भारतीय संस्कृति में पर्यावरणीय चेतना''

उपशीर्षक :

1. भारतीय शिक्षा और पर्यावरण।
2. आधुनिक शिक्षा प्रणाली और पर्यावरण जागरूकता।
3. उत्तराखण्ड में परम्परागत जल संवर्धन प्रणाली और विकास।
4. हिमालयी क्षेत्र में पर्यावरण संचेतना।
5. प्राचीन भारतीय धर्म एवं पर्यावरण।
6. बौद्ध एवं जैन परम्परा में प्रकृति चित्रण।
7. समकालीन विश्व में पर्यावरणीय जागरूकता।
8. पर्यावरण के सन्दर्भ में विधिक चेतना।
9. आधुनिक पत्रकारिता एवं पर्यावरण।
10. आधुनिक भारतीय साहित्य में पर्यावरण।

राठ महा विद्यालय : एक संक्षिप्त परिचय

उत्तराखण्ड राज्य के पौड़ी गढ़वाल जनपद में विकासखण्ड थैलीसैंण के पैठाणी कस्बे में जिला मुख्यालय पौड़ी से लगभग 50 (पचास) किमी0 पूर्व पश्चिमी नयार नदी के तट पर स्थित राठ महाविद्यालय की स्थापना वर्ष 2003 में की गयी।

जनपद का यह भू-भाग विकास से कोसों दूर अशिक्षा और पिछड़ेपन से पीड़ित रहा है। आजादी के बाद भी यह क्षेत्र शिक्षा के अभाव में अनेक तरह की विषमताओं से घिरा रहा। यद्यपि शुरुआती दौर में प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा के क्षेत्र में प्रारम्भिक प्रगति ने जरूर कुछ विसंगतियों को परास्त किया, परन्तु उच्च शिक्षा प्राप्त करना यहाँ के युवाओं का स्वप्न मात्र बना ही रहा। इस अभाव और वेदना को महसूस करते हुए इसी क्षेत्र के ग्राम बहेड़ी के युवा श्री गणेश गोदियाल जो सुदूर मुम्बई में एक स्थापित व्यवसायी के रूप में क्रियाशील थे, ने क्षेत्र के तमाम संभ्रान्तजनों, जागरुक नागरिकों व जनप्रतिनिधियों से सम्पर्क व सहयोग स्थापित कर ग्राम सभा पैठाणी के दानवीरों द्वारा दान की गई भूमि पर इस महाविद्यालय को आकार देना सुनिश्चित किया।

जुलाई 2003 में महज 30 छात्र-छात्राओं, प्राचार्य, सात प्राध्यापकों व 18 शिक्षणेत्तर कर्मियों के साथ यह **''मिशन उच्च शिक्षा''** प्रारम्भ हुआ, जो आगे चलकर नये कीर्तिमान गढ़ता चला गया।

26 मार्च 2015 को श्री गणेश गोदियाल (तत्कालीन विधानसभा सदस्य, उत्तराखण्ड) के निजी प्रयासों से इस महाविद्यालय को राज्य सरकार की अनुदानित श्रेणी में लाया गया है। वर्तमान समय में महाविद्यालय में बी0ए0, बी0एड0 एवं बी0पी0एड0 पाठ्यक्रम संचालित हैं, जिसमें लगभग 750 छात्र-छात्राऐं अध्ययनरत हैं।

पौडी गढ़वाल जनपद के कोटद्वार (गढ़वाल का प्रवेश द्वार) से लगभग 150 किलोमीटर दूर स्थित पैठाणी (थैलीसैण ब्लाक) उत्तराखण्ड के मानचित्र में एक छोटे से गाँव के रूप में अंकित है। लेकिन यह एक छोटा सा गाँव राजनीतिक, धार्मिक एवं शैक्षिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

उत्तराखण्ड में पर्यटन की दृष्टि से पैठाणी के महत्व को किसी भी अन्य स्थान से कमतर नही आंका नही जा सकता। पैठाणी एक पौराणिक गाँव है क्योकि इसका उल्लेख स्कन्दपुराण के केदारखण्ड में दर्ज है और दर्ज है इससे जुडे कई रोचक प्रसंग। केदारखण्ड के अनुसार राष्टकूट पर्वत पर भगवान शिव ने कठोर तप किया था इसी कारण यहां पर राहू मंन्दिर स्थापित है। केदारखण्ड में कहा गया है **'' ऊँ भूर्भव स्वः राठीनापुरोहव पैठीन सिग्रोत्र राठो इहागेच्छिति।''** अर्थात् राहू के गोत्र पैठीनली के कारण इस गाँव का नाम पैठाणी पड़ा। राहू के अद्भुत मंदिर एवं राष्ट्रकूट पर्वत के कारण यह पूरा क्षेत्र राठ क्षेत्र कहलाता है। मान्यताओं के अनुसार पैठाणी स्थित प्रसिद्ध मन्दिर का निर्माण आठवीं शप्ताब्दी ईस्वी में आदि शंकराचार्य द्वारा करवाया गया। वर्तमान समय में इस मन्दिर की देख-भाल बद्री केदार मंदिर समिति द्वारा की जाती है।

पंजीकरण शुल्क :-

प्राध्यापक :- रू0 700/-

शोध छात्र :- रू0 350/-

छात्र :- रू0 100/-

आवश्यक विवरण :-

पंजीकरण शुल्क सेमिनार राठ महाविद्यालय पैठाणी के खाता सं0 **38867576634 IFSC-SBIN0007493** में डिमांड ड्राफट/NEFT में किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त सेमिनार स्थल पर भी शुल्क जमा किया जा सकता है। पंजीकरण हेतु सम्पर्क सूत्र-

01. डॉ0 राजीव दूबे- 9675362906
02. डॉ0 शिवेन्द्र सिंह- 8004043877
03. डॉ0 बीरेन्द्र चन्द- 9557400895

समस्त संभावित प्रतिभागियों से अनुरोध है कि वे अपने शोध पत्र से सम्बन्धित सारांश (Abstract) 200-300 शब्दों में दिये गये ई-मेल पर कृतिदेव-10 फान्ट एवं साइज 14 में प्रस्तुत करें।

समस्त प्रतिभागियों को सूचित किया जाता है कि वे सम्बन्धित विषय और उप विषय से सम्बन्धित मौलिक एवं प्रासंगिक शोधपत्र प्रकाशन हेतु प्रस्तुत कर सकते हैं।

चयनित शोधपत्रों का प्रकाशन ISBN युक्त शोध पत्रिका में प्रकाशित किया जायेगा।

ई-मेल : **rmvpaithani.seminar019@gmail.com**